संस्कृति शोध संदेश

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष - 2 अंक - 7 नवम्बर-जनवरी - 2013-14 पृष्ठ - 64

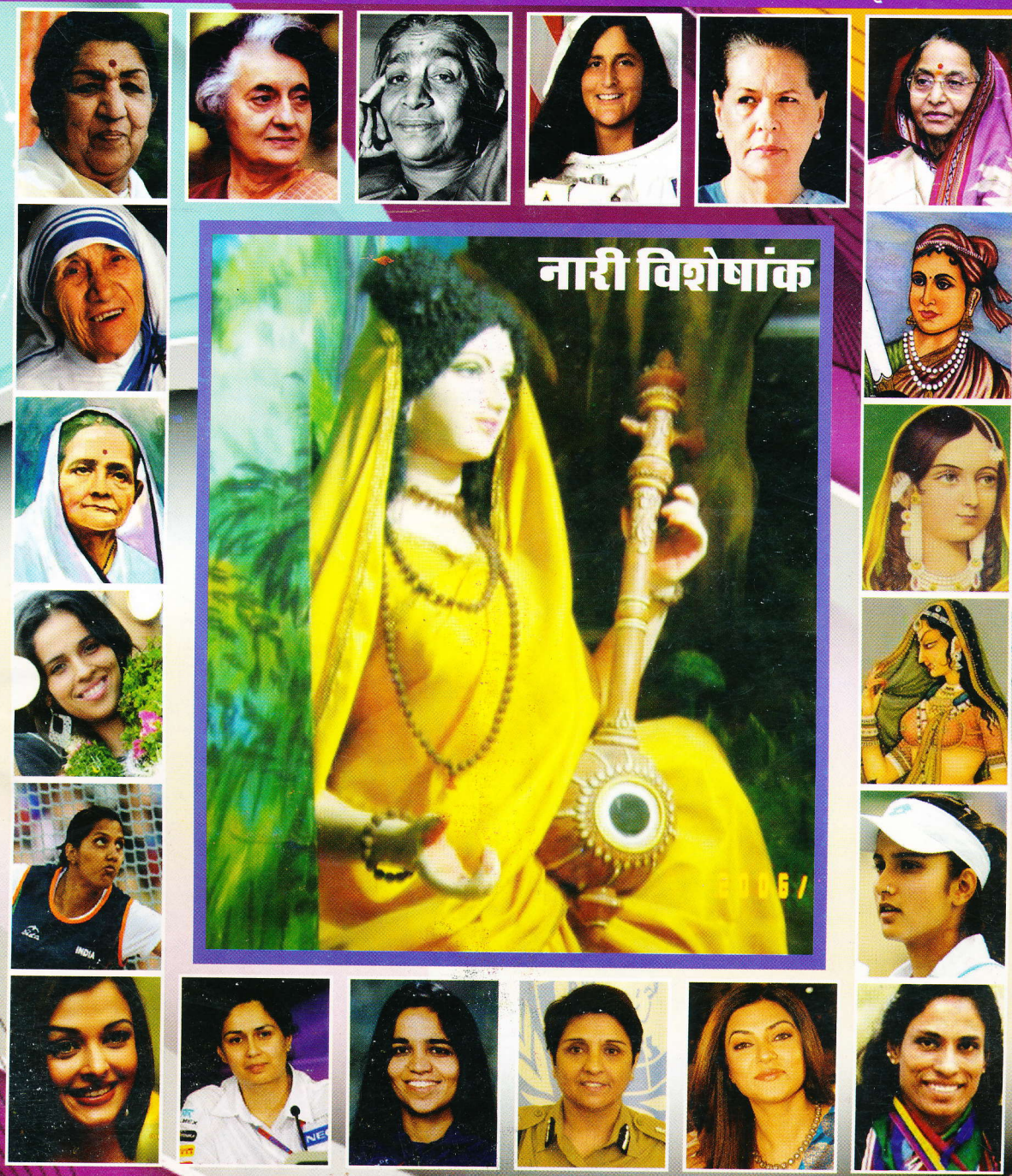

अनुक्रमणिका

क्रम.	विषय		पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	० डॉ. हेमन्त कृष्ण मिश्र	3
2.	मातृ-स्तोत्र	० महर्षि वेद व्यास	6
3.	भारतीय संस्कृति में नारी-धर्म	० डॉ. अलका शर्मा	7
4.	वैदिक युगीन नारी और मानवाधिकार	० डॉ. सुनीता इन्दोरिया	17
5.	नारी-धर्म	० संकलन एवं प्रस्तुति- संगीता शास्त्री	22
6.	नारी नर से भारी	० शम्भू 'सरल'	27
7.	प्राचीनभारते नारी शिक्षा	० प्रो. दामोदर शास्त्री	29
8.	अमृता प्रीतम के उपन्यासों में नारी अस्मिता के विविध रूप	० राकेश कुमार यादव	33
9.	नारी का महान् व्यक्तित्व	० राजेन्द्र सिंह सांखला	36
10.	स्त्रीशिक्षायाः महत्त्वम्	० डॉ. माणिक्यलाल शास्त्री	40
11.	भारतीय संस्कृति की रक्षा में नारी का योगदान	० डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज	43
12.	स्त्रीशिक्षाया आवश्यकता	० श्री उत्पल शास्त्री	51
13.	नारी सम्मान	० मोहनसिंह डूडी	52
14.	अबला शब्द से रुष्ट नारी	० शम्भू 'सरल'	53
15.	शब्द-व्युत्पत्ति और नारी	० डॉ. पंकज पुरोहित	57

भारतीय संस्कृति की रक्षा में नारी का योगदान

० डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज
सहायक आचार्य– संस्कृत एवं प्राकृत विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (राजस्थान)

संसार की समस्त सभ्यताओं का पर्यवेक्षण करने पर हमें ज्ञात होता है कि समस्त सभ्यताओं में भारतीय आर्य सभ्यता सर्वाधिक प्राचीन है। उसके मूलभूत जीवन-दर्शन एवं मान्यताएं, जिनका विधान हमारे पूर्वज मनीषियों ने किया था, आज भी हमारी संस्कृति को अपूर्व बल एवं प्रेरणा देते रहते हैं। यद्यपि विभिन्न परिस्थितियों में समय-समय पर आर्य सभ्यता के सिद्धान्तों में मनीषी एवं धर्मप्रणेताओं ने देशकालानुसार कुछ परिवर्तन भी किए हैं, किन्तु फिर भी आर्य संस्कृति के आधार तत्त्वों के मूलभूत सिद्धान्तों में कुछ ऐसी विशेषताएँ निहित कर दी गयी हैं जो आज भी भारतीय संस्कृति को अन्य सभी संस्कृतियों से पृथक् एवं विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

ऐसी महान् संस्कृति के निर्माण एवं संवर्धन में आदि काल से ही नारी का गरिमामय, महत्त्वपूर्ण एवं अपरिहार्य योगदान रहा है। पारिवारिक आदर्शों, सामाजिक जीवन, राजनैतिक संगठनों एवं पुरुष की आत्मिक शक्ति को दृढ़ एवं उत्कृष्ट बनाने में स्त्री ने अपने विविध रूपों में त्याग एवं तपस्या के जो उदाहरण समय-समय पर प्रस्तुत किए हैं, वे भारतीय संस्कृति के वैभव में स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। इसीलिए किसी समाज के सांस्कृतिक विकास का मानदण्ड नारी की मर्यादा ही है। मनु का यह कथन कि जहाँ नारियाँ पूजी जाती

हैं, वहाँ देवता निवास करते हैं[1] नारी प्रतिष्ठा के मानदण्ड का एक उत्कृष्ट पैमाना है। यही भारतीय संस्कृति के गौरव का मंत्र है तथा उसके उत्कर्ष की आधारशिला है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में नारी को भरपूर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

विद्या के क्षेत्र में नारी का योगदान

ऋग्वेद के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि वैदिक काल में स्त्रियाँ उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र थीं। वे वेदाध्ययन करती थीं तथा कविताएँ आदि रचती थीं। ऋग्वेद के ऐसे अनेक सूक्त हैं, जिनका साक्षात्कार नारियों ने किया। उदाहरणार्थ, सूर्या नाम की ऋषिका ने ऋग्वेद के दशम मण्डल के 85वें सूक्त का साक्षात्कार किया, इन्द्राणी ने ऋग्वेद के दशम मण्डल के 145वें सूक्त का साक्षात्कार किया, 'वाक् देवी' ने ऋग्वेद के दशम मण्डल के 125वें सूक्त की तथा वैदिक दैवी सूक्त की ऋषिका है, तथा ब्रह्मवादिनी घोषा, ऋग्वेद दशम मण्डल के 39वें एवं 40वें सूक्तों की द्रष्टा हैं। इनके अतिरिक्त विश्पला, अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिकता सर्पराज्ञी, ममता, यमी, रोमाशा, जुहू, निवावारी, उर्वशी, श्रद्धा इत्यादि नारियों ने भी ज्ञान-साधना के क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त किए हैं।

बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए स्वयं संघमित्रा थेरी लंका गयी, जहाँ उसने भिक्षु संघ की स्थापना की। थेरियों ने बौद्ध साहित्य को सुन्दर-सुन्दर रचनाएं प्रदान कीं, जो 'थेरी गाथा' के नाम से प्रसिद्ध है। थेरियों में उन सभी वर्णों एवं श्रेणियों की स्त्रियों का नामोल्लेख है, जिन्होंने बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित होकर, संन्यास ले लिया था।

डॉ. अल्तेकर[2] ने दक्षिण भारत की अनेक स्त्रियों का उल्लेख किया है, जिन्होंने प्राकृत भाषा में उच्च कोटि की रचनाएँ करके स्मृतियुग की समृद्धि को बढ़ाया है। इनमें रेवा, रोहा, माध्वी, अनुलक्ष्मी पाहायी, बद्धवाही, शशिप्रभा, शीलभट्टारिका आदि प्रमुख हैं। आठवीं शताब्दी में आयुर्वेद के जिन ग्रन्थों का अरबी में अनुवाद हुआ, उनमें एक महिला लेखिका की 'प्रसव-विज्ञान' पर लिखी पुस्तक भी थी। इस महिला का नाम अरबी में संभवतः 'रुसा' था।

---

1. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। मनु, 3.56
2. अल्तेकर, प्रा.भा.शि.प., पृ. 165

इस प्रकार हम देखते हैं कि नारी ने पुरुष के सहयोग के अभाव में स्वतंत्र रूप से अध्यात्म-साधना में सफलता प्राप्त की तथा अपनी अमूल्य रचनाओं से साहित्य का वर्द्धन करते हुए विद्या के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

पारिवारिक व्यवस्था में नारी का योगदान

'स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विरोधोऽस्ति कश्चन'[3]

उपर्युक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि नारी जाति के विषय में स्मृतिकारों के विचार कितने उत्कृष्ट एवं उदार रहे हैं। स्त्रियों को गृहलक्ष्मी के समान कहा गया है, अतएव श्री तथा स्त्री में कोई भेद नहीं है। स्त्री के अभाव में घर को घर नहीं कहते, स्त्री ही घर है। सन्तानोत्पत्ति, सन्तान का पालन-पोषण, प्रतिदिन के अतिथि तथा मित्रादि के सत्कार-रूपी लोक-व्यवहार के पालन का मुख्य दायित्त्व स्त्रियाँ ही निर्वहन करती हैं। धार्मिक कृत्य सेवा-सुश्रूषा, श्रेष्ठ रीति तथा पितरों एवं स्वर्ग आदि– स्त्रियों के ही अधीन है[4]। निश्चय ही मनु ने समाज के ढांचे में नारी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। मनु नारी को कोई अनिच्छित बोझ नहीं समझते, अपितु मनुष्य की सांसारिक एवं आध्यात्मिक अभिलाषाओं की पूर्ति का मुख्य साधन मानते हैं। स्त्रियों ने पारिवारिक व्यवस्था को अपनी कुशलता और चतुराई से सुव्यवस्थित करते हुए उसमें अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

धार्मिक भावना स्थापित करने में नारी का योगदान

स्मृतिकाल में वैदिक धर्म से उपेक्षित हो जाने पर पौराणिक एवं भक्ति-धर्मों ने नारियों को विशेष रूप से आकृष्ट किया। कृष्ण के जीवन काल में ही द्रौपदी एवं गोपियाँ उनको ईश्वर मानकर, भक्ति करने लगी थीं। अन्यत्र भी अनेक भक्त नारियों के उल्लेख मिलते हैं, जिन्होंने संतों के समान ही प्रगाढ़ एवं उत्कृष्ट भक्ति से ईश्वर को याद किया और जिनकी आर्त एवं प्रेमयुक्त पुकार को सुनकर ईश्वर चुप नहीं बैठे रह सके।

---

3. मनु, 9.26
4. उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्।
   प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्रीनिबन्धनम्।। मनु, 9.27, 28

इसी प्रकार गोपियाँ कृष्ण-भक्ति में पूर्णतया एकनिष्ठ थीं। दक्षिण भारत में आलवार सम्प्रदाय की एक 'आंडाल' नाम की स्त्री अपनी अनन्य, असीम भक्ति के लिए विख्यात है। इस स्त्री के लिखे हुए पद 'तिरुप्पावह' नामक पुस्तक में संकलित हैं।[5] संत चरणदास की शिष्या सहजोबाई संत तो थी ही, साथ ही 'सहजो बाई की बानी सहज प्रकाश' नामक ग्रंथ की रचनाकार भी थी, जो कि संत-साहित्य की अमूल्य निधि है।[6] झाली रानी भी मीरा की भाँति मेवाड़ की एक दूसरी प्रख्यात भक्त नारी थी।[7] मीरा की कृष्ण-भक्ति 'जिज्ञासु' की एक प्रबल भगवत् तृष्णा थी।

संत सुवचना दासी एक सिख संत नारी थी, जिसने प्रेमतरंगिनी, विज्ञान सागर तथा विदेहमोक्षप्रकाश आदि ग्रंथों की रचना की। रामचरितमानस में तुलसीदास द्वारा वर्णित अछूता, निरक्षरा नारी शबरी की भगवद् भक्ति नारी के भोले, निष्कपट भक्त-हृदय का ज्वलंत उदाहरण है और उस पर भगवत् कृपा की वृष्टि ईश्वर के भक्तवत्सल भाव को प्रकट करती है।

तथागत बुद्ध और भगवान् महावीर स्वामी लगभग समकालीन रहे। धर्मक्षेत्र में जहाँ बुद्ध नारी के लिए उदाराशय नहीं रह पाये; वहाँ जिनेश्वर देव ने धर्म के संदर्भ में नर-नारी, दोनों को समान अधिकारी माना। मनुष्यमात्र के लिए धर्माचरण के द्वार उन्होंने उन्मुक्त कर दिये थे। इस निर्बाधता के वातावरण में साँस लेकर नारी का गत आत्म-विश्वास भी पुनर्जागृत होने लगा था। उन्होंने स्त्री-पुरुष दोनों के लिए मुनिवृत्ति की सुविधा सुलभ करा दी थी। अनासक्ति और परिव्रजन की दिशा में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ कुछ अधिक ही बढ़ी हुई थीं। आध्यात्मिक साधना के उच्च से उच्चतर स्तर पार करती हुई, स्त्रियाँ कैवल्य प्राप्ति का सामर्थ्य भी रखती हैं। तीर्थंकर मल्लिनाथ को इस क्षमता एवं गरिमा का श्रेष्ठतम उदाहरण माना जा सकता है। तेईसवें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ ने भी नारी जाति को धर्माचरण के क्षेत्र में सम्मान्य स्थान प्रदान किया। श्रमण-

---

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 192
6. परशुराम चतुर्वेदी, उत्तर भारत की सन्त परम्परा, पृ. 240
7. वही

श्रेष्ठ भगवान् महावीर स्वामी की सर्वप्रथम शिष्या होने का गौरव भी एक नारी को प्राप्त था, उसका नाम था– आर्या चन्दना।

पथ-दर्शक के रूप में नारी

सम्पूर्ण हिन्दू साहित्य में माता के रूप में नारी की विभिन्न प्रकारों से स्थान-स्थान पर प्रशंसा हुई है। महाभारत में तो स्पष्ट शब्दों में यहाँ तक कहा गया है कि 'माता के समान कोई गुरु नहीं होता[8], अतएव माता के रूप में स्त्री ही पुरुष की सर्वप्रथम गुरु होती है। माता जैसे चाहे वैसे संस्कार संतान में डाल सकती है। माता अपने शिशुओं का किस प्रकार पथ-प्रदर्शन करती है, ऐसे उदाहरणों की भी इतिहास में कमी नहीं है। छान्दोग्योपनिषद् में वर्णित सत्यकेतु जाबाल की कथा इस बात का परिचय देती है कि किस प्रकार माता अपनी संतान को सत्यवादिता सिखाती है। बालक ध्रुव को ईश्वर-भक्ति का पाठ पढ़ाने वाली उसकी जननी सुनीति ही थी। विमाता की झिड़की से खिन्न ध्रुव को माता सुनीति ने सच्ची भगवद्भक्ति का मार्ग दिखाया। माता के उपदेश को मान कर ध्रुव ने सच्चे भाव से अत्यन्त कठोर तप किया।[9] महाभारत की नारी पात्राएँ विदुला एवं कुन्ती माता के रूप में एवं द्रौपदी पत्नी अथवा सहचारी के रूप में, पुरुष की पथ-प्रदर्शिका वर्णित हुई हैं। विदुला केवल अपने पुत्र की ही पथ-प्रदर्शिका नहीं थी, अपितु सम्पूर्ण भारतीय नारी-समाज पर वह अपने आदर्शों की एक अमिट छाप छोड़ गयी है।

शिवाजी की वीरता का स्रोत उनकी माता जीजाबाई का देशभक्त एवं राजनैतिक स्वभाव था। गाँधीजी में जो महान् संस्कार थे, वे सब उन्हें अपनी माता से जन्मजात ही प्राप्त हुए थे, जबकि उनकी माता निरक्षर थीं। किन्तु वे अत्यन्त महान् आदर्शों वाली नारी थीं। इस प्रकार गर्भकाल में ही नारियों ने अपनी संतानों पर ऐसे सुन्दर संस्कारों की छाप डाली है, जिनसे उनके आदर्शों की नींव जमी है और जीवन का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

त्याग की प्रतिमूर्ति नारी

भारत की नारी ने विभिन्न रूपों में पुरुष का पथ-प्रदर्शन तो सदैव किया ही है

---

8. नास्ति मातृसमो गुरुः' म.भा., 12.342.18,

9. भागवत पुराण, 4.7

किन्तु समय-समय पर अपने अमूल्य त्याग का जैसा परिचय उसने दिया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। लोकलाज, मर्यादा, देश-रक्षा तथा स्वामी-भक्ति का निर्वाह करने के लिये प्राणों की बाजी लगा देने में भी उसने संकोच नहीं किया है। गान्धारी अपने चरित्र, दूरदर्शिता, न्यायप्रियता आदि सद्गुणों के लिये संस्कृति के इतिहास में अमर है। वह अपने पुत्र दुर्योधन को सदा पाण्डवों के प्रति न्यायपूर्ण बनने का उपदेश देती रही। इसी प्रकार रामायण की स्त्री-पात्र सुमित्रा भी अपने पुत्र लक्ष्मण को राम के साथ चौदह वर्षों तक जंगलों में भटकने के लिये जिस सहृदयता से भेजती है, वह सराहनीय है। सीता का त्याग उत्कृष्ट था, जिसने राजप्रासाद में रहने की अपेक्षा बीहड़ वनों में भटकना श्रेष्ठ समझा। पन्ना धाय के बलिदान की कहानी कभी भुलायी नहीं जा सकती, जिसने अपने इकलौते पुत्र की आहुति देकर राणा सांगा के छः वर्षीय पुत्र उदय सिंह की प्राण-रक्षा की और चित्तौड़ के उत्तराधिकारी को सुरक्षित रखा। माता जीजाबाई ने रातों-रात घोड़े पर सवार होकर, घर से निकल कर, गर्भस्थ शिशु की रक्षा की थी।

उपर्युक्त समस्त विवेचना एवं उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय संस्कृति की सुरक्षा में नारी का महान् योगदान रहा है। नारी ने अपनी उत्कृष्ट शक्ति, त्याग एवं सहिष्णुता का परिचय देकर, इस राष्ट्र को महान् बनाया है। यही कारण है कि आज भी संस्कृति की सुरक्षा की अपेक्षा नारियों से ही की जाती है।

शासन-व्यवस्था में नारी का योगदान

भारत की नारी ने जीवन की कठोरतम परिस्थितियों में भी अपने जिस साहस एवं शौर्य का परिचय समय-समय पर दिया है, उसे भारत का इतिहास कभी भुला नहीं सकता। पति एवं पुत्र के अभाव में अथवा आपत्काल में नारी ने शासन-व्यवस्था का जैसा संगठन किया एवं संग्राम-भूमि में विशाल सैन्य-संचालन का कौशल दिखलाकर, जिस प्रकार अपने कमनीयत्व के विरुद्ध पौरुष का प्रदर्शन किया है, वह इतिहास के पन्नों पर अमिट है। हार कर घर लौटने वाले पति के लिये दुर्ग का द्वार बंद करवा देने वाली भारतीय वीरांगना ही हो सकती है। समय-समय पर पुरुष को राजनीति विषयक सम्मति प्रदान करने में नारी कभी पीछे नहीं रही। संकट में पड़े हुए पति को

जिस चतुराई से पत्नी मुक्त कर लेती है, यह भारत की नारी में ही दृष्टिगत होता है।

ऋग्वेद में एक ऐसा उल्लेख मिलता है, जिसने नारी-सेना की ओर संकेत किया गया है। नमुचि नाम के अनार्य राजा ने इन्द्र के विरुद्ध युद्ध करने के लिये नारियों को भी आयुध धारण कराये थे।[10] स्त्रियों को अस्त्र-शस्त्र सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाता था तथा वे आवश्यकतानुसार अपने इस ज्ञान का प्रयोग भी करती थीं[11] कभी-कभी वे पुरुषों के साथ युद्ध में सम्मिलित भी हो जाया करती थीं।

कुछ ऐसे उद्धरण भी प्राप्त होते हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में स्त्रियों को राजगद्दी भी सौंप दी जाती थी। रामायण में राम को वनवास मिलने पर सीता को राजगद्दी सौंपने का प्रस्ताव रखा गया है।[12] महाभारत युद्ध के बाद भीष्म ने युधिष्ठिर को परामर्श दिया था कि वे युद्ध में मृत पुत्रहीन राजाओं की पुत्रियों को राज्य गद्दी सौंप दें।[13] किन्तु स्त्रियों के स्वतंत्र शासन करने के उद्धरण बहुत कम ही प्राप्त होते हैं, क्योंकि साधारणतः स्त्रियों का शासन करना राजनीतिज्ञों को मान्य नहीं था। वस्तुतः उनकी धारणा थी कि नैसर्गिक गुणों के आधार पर स्त्रियाँ शासन-संचालन के योग्य नहीं होतीं। अतएव स्वतंत्र शासन चलाने वाली नारियों के उदाहरण यदा-कदा ही प्राप्त होते हैं।

मराठा राजनीति के क्षेत्र में ताराबाई, अनुबाई, अहिल्याबाई तथा लक्ष्मीबाई अपनी बुद्धिमत्ता, कौशल, राजनीतिज्ञता एवं वीरता के लिये अमर हैं। भारतीय नारियों की शासन-संचालन कुशलता की प्रशंसा करते हुए, एक एंग्लो इण्डियन अधिकारी जे. एस. मिल ने कहा था– "जिन हिन्दू राज्यों में सम्यक् देखभाल तथा सही अर्थ-व्यवस्था, बिना बल प्रयोग के उचित व्यवस्था, कृषि में उन्नति तथा साधारण जन समुदाय में सम्पन्नता दिखाई देती है उन चार राज्यों में से तीन राज्य नारियों द्वारा

10. ऋग्वेद, 5.30.9

11. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, हिन्दू राज्य शास्त्र, पृ. 286

12. आत्मा हि दारा सर्वेषां दारसंग्रहवर्तिनाम्।
आत्मेयमिति रामस्य पालयिष्यति मेदिनीम्। वा.रा., 2.37.23, 24

13. कुमारो नास्ति येषां च कन्यास्तत्राभिषेचय। म.भा., 12.32.33

संचालित हैं।[14] इससे सिद्ध होता है कि भारतीय शासिकाएँ कितनी नीतिकुशल थीं।

राजपूत स्त्रियों में शूरवीरता, देशभक्ति, साहस एवं बलिदान के अनेक उदाहरण हैं। युद्ध भूमि में लड़ते-लड़ते प्राण दे देना, वे युद्ध क्षेत्र से भाग जाने से कहीं अच्छा समझती थीं।[15] युद्ध से हार कर लौटने वाले महाराज यशवंतसिंह के लिये उसकी महारानी ने दुर्ग के द्वार बंद करवा दिये थे। पति को युद्ध से विचलित होता जानकर, अपनी आसक्ति से उसे दूर करने के लिये स्वयं अपना शीश काट डालने वाली हाडी रानी के गीत आज भी गाये जाते हैं। इसी प्रकार पद्मिनी के जौहरव्रत की कहानी भी अमर है।

इस प्रकार भारतीय इतिहास वीरांगनाओं की अमर कहानियों एवं बलिदानों से ओतप्रोत है। उनके मर्यादाशील, कर्त्तव्यनिष्ठ, न्यायप्रिय, ओजस्वी-तेजस्वी एवं शौर्यपूर्ण जीवन चरित्रों पर भारतीय संस्कृति को सदा गर्व रहेगा। स्त्रियों ने कभी माता के रूप में, कभी बहन के रूप में तथा कभी पत्नी के रूप में भारतीय संस्कृति की रक्षा करते हुए, पुरुषों के ओजोहीन हृदयों को शौर्य से भर दिया है और उनमें कार्य-शक्ति का संचार कर, उन्हें कार्य क्षेत्र में अग्रसर होने के योग्य बनाया है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1. ऋग्वेद, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, सूरत
2. वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर
3. महाभारत, गीता प्रेस, गोरखपुर
4. श्रीमद् भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर
5. मनुस्मृति, निर्णय सागर, बम्बई
6. याज्ञवल्क्यस्मृति, डॉ. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
7. प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, डॉ. गजानन्द शर्मा, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद
8. उत्तर वैदिक समाज एवं संस्कृति, डॉ. विजय बहादुर राव, भारतीय विद्या प्रकाशक, वाराणसी
9. स्मृतियों में नारी, डॉ. भारती आर्य, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, वाराणसी
10. भारतीय संस्कृति में नारी, डॉ. लता सिंहल, परिमल पब्लिकेशन्श, दिल्ली
11. भारतीय वांग्मय में नारी, आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर

14- Quoted by A.S.Altekar in "Position of Women in Hindu Civilization", p. 189

15. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, 13वाँ संस्करण, पृ. 24